सत्य के अनेक पहलू

प्रिलिम्स के लिये:

महात्मा गांधी, अहिंसा, सत्याग्रह

मेन्स के लिये:

सत्य की दुविधाएँ और जटिलता, ऐतिहासिक आख्यानों में नैतिक दुविधाएँ, नैतिक आचरण और लोकतांत्रिक लोकाचार, **महात्मा गांधी की शिक्षाओं की प्रासंगिकता और महत्त्व**

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

चर्चा में क्यों?

सहस्राब्दियों से दार्शनिक **सत्य की प्रकृति,** जानने की **योग्यता तथा क्या वह सार्वभौमिक** है या व्यक्तिपरक है, जैसे प्रश्नों से जूझते रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप इस अवधारणा पर विभिन्न दृष्टिकोण सामने आए हैं।

सत्य के संबंध में विभिन्न विचारकों के दृष्टिकोण क्या हैं?

- **पत्राचार सिद्धांत:**
  - **अरस्तू और बर्ट्रेंड रसेल** जैसे विचारकों का मानना है कि सत्य का निर्धारण हमारे कथनों या विचारों तथा बाह्य विश्व के मध्य स्थापित सामंजस्य से होता है **अर्थात् एक कथन सत्य है यदि वह वास्तविकता को सटीक रूप से प्रतिबिंबित करता** है।
  - उदाहरण के लिये **"घास हरी है"** सत्य है क्योंकि वास्तविक संसार में घास में **हरेपन का गुण** होता है।
  - यह सिद्धांत उन **अमूर्त सत्यों (जैसे, गणितीय प्रमेय) पर विचार नहीं** करता जो प्रत्यक्ष रूप से भौतिक वास्तविकता से समानता नहीं रखते हैं।
- **सुसंगति सिद्धांत:**
  - **इमैनुअल कांट** और **फ्रेडरिक हेगेल** जैसे विचारकों का मानना है कि **सत्य का निर्धारण विचारों की आंतरिक संगति** से होता है, जहाँ एक कथन तभी सत्य होता है **जब वह ज्ञान के स्थापित ढाँचे के साथ सुसंगत** हो।
  - उदाहरण के लिये **वैज्ञानिक सिद्धांतों को सत्य माना जाता है, यदि वे आंतरिक रूप से सुसंगत हों** और व्यापक प्रकार की घटनाओं की व्याख्या करते हों।
  - यह सिद्धांत **संकीर्ण विचार प्रणालियों (Closed Belief Systems)** को जन्म दे सकता है जो **मौजूदा ढाँचे के विपरीत नए साक्ष्य का विरोध करते** हैं।
- **व्यावहारिक सिद्धांत:**
  - **विलियम जेम्स और जॉन डेवी** जैसे विचारकों का तर्क है कि **किसी कथन की सत्यता उसकी व्यावहारिक उपयोगिता एवं सफल परिणाम देने** की उसकी क्षमता द्वारा निर्धारित होती है।
  - **उदाहरण: गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत** सत्य माना जाता है क्योंकि यह हमें वस्तुओं की गति का पूर्वानुमान लगाने और स्थिर संरचनाएँ बनाने की अनुमति देता है।
  - यह सिद्धांत सत्य को संदर्भ के सापेक्ष बनाता है **तथा मानवीय उपयोगिता से स्वतंत्र वस्तुनिष्ठ तथ्यों को ध्यान में** नहीं रखता।
- **महात्मा गांधी की सत्य की खोज:**
  - **ईश्वरीय सत्य और अहिंसा:**
    - **गांधीजी का सत्य केवल तथ्यात्मक सटीकता** नहीं था। उन्होंने इसे **परम सत्य, ईश्वर के बराबर** बताया।
    - सत्य स्वाभाविक रूप से स्पष्ट है, लेकिन यह तभी स्पष्ट होता है जब इसके आस-पास का अज्ञान दूर हो जाता है। इस परम **सत्य** को **अहिंसा के माध्यम** से समझा जा सकता है।
    - **उनका सत्य केवल एक अवधारणा नहीं है, बल्कि ईश्वर के समतुल्य एक शाश्वत सिद्धांत है,** जो सत्य की खोज और अहिंसा के अभ्यास को अविभाज्य बनाता है।
    - सत्य की अंतहीन खोज में आत्मनिरीक्षण, निरंतर प्रश्न पूछना और गलतियों को स्वीकार करने की तत्परता शामिल थी,

जिसमें **सत्य को एक निर्धारित समापन बिंदु के बजाय आत्म-खोज की एक सतत् यात्रा के** रूप में देखना आवश्यक है।

- **सत्य का क्रियान्वयन:**
  - सत्य के प्रति **गांधी की प्रतिबद्धता उनके विरोध** के तरीकों तक फैली हुई थी। उन्होंने सत्याग्रह की रचना की, **जिसका अर्थ है "सत्य बल।"**
  - सत्याग्रहियों अर्थात् गांधीजी के अनुयायियों का उद्देश्य **सविनय अवज्ञा** और अटल सत्यनिष्ठा के माध्यम से उत्पीड़कों की अंतरात्मा को जागृत करना था।

सत्य की दुविधाएँ और जटिलताएँ क्या हैं?

- **सत्य की जटिलता:**
  - भारत के राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न, **अशोक स्तंभ पर** स्थित **तीन सिंह, सत्य के तीन दृष्टिकोणों** के प्रतीक हैं: मेरा सत्य, आपका सत्य, और एक पर्यवेक्षक का सत्य।
  - **सत्य का चौथा, अपरिमेय आयाम अक्सर इस कहावत की ओर ले जाता है, "केवल ईश्वर ही सत्य जानता है।"**
  - उदाहरण के लिये, चुनाव के दौरान भारत निर्वाचन आयोग का कार्य चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
    - चुनौती यह है कि राजनीतिक दल अक्सर चालाकी से जातिगत या सांप्रदायिक भाषा का प्रयोग करते हैं, जिससे निर्वाचन आयोग के लिये कार्रवाई करना कठिन हो जाता है।
    - आदर्श आचार संहिता (Model Code of Conduct- MCC), हालाँकि इन आधारों पर स्पष्ट अपील पर प्रतिबंध लगाती है, लेकिन इसमें मौजूद दोषों के कारण राजनीतिक दल **अप्रत्यक्ष** रूप से विभाजनकारी बयानबाज़ी कर सकते हैं।
- **सत्य और असत्य की दुविधा:**
  - महाभारत में **युधिष्ठिर के अर्धसत्य** जैसे ऐतिहासिक और पौराणिक आख्यान, सत्य के साथ छेड़छाड़ किये जाने पर सामने आने वाली नैतिक दुविधाओं को दर्शाते हैं।
  - युधिष्ठिर द्वारा **अश्वत्थामा की मृत्यु** की घोषणा के कारण **गलत व्याख्या** हुई, जिसके कारण **द्रोणाचार्य की मृत्यु** हो गई।
  - यह कहानी उन नैतिक जटिलताओं को रेखांकित करती है जो तब उत्पन्न होती हैं जब

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/many-facets-of-truth